इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज का रजत जयंती सम्मेलन

साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 23 से 25 नवंबर, 2025 तक विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ की प्रेरणा, सहमति एवं मार्ग निर्देशन में **इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ (ISBS)** का तीन दिवसीय **रजत जयंती सम्मेलन** आयोजित किया गया। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर के विभिन्न भागों के साथ ही वियतनाम, म्यांमार और श्रीलंका से लगभग **150 से अधिक विद्वान, आचार्य और शोधार्थी** सम्मिलित हुए। तीन दिनों में कुल **80 से अधिक शोधपत्र** पढ़े गए, जिनमें बौद्ध-दर्शन, बौद्ध इतिहास, पालि भाषा, बौद्ध स्थापत्य, युद्धकाल में बौद्ध धर्म की भूमिका तथा समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में बौद्ध विचारधारा जैसे विविध विषयों पर गंभीर अकादमिक विमर्श हुआ।

स्थापना, उद्देश्य और रजत जयंती वर्ष

इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ (ISBS) की स्थापना वर्ष 2000 में इस स्पष्ट उद्देश्य के साथ की गई थी कि **भारत में बौद्ध अध्ययन की प्राचीन परंपरा को केवल संरक्षित ही न किया जाए बल्कि उसे आधुनिक शोध पद्धति, वैश्विक संवाद और अन्तर–विषयक अध्ययन के साथ पुनर्जीवित किया जाए।** संस्था का मूल संकल्प बौद्ध-धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, कला और पुरातत्व जैसे विविध लेकिन परस्पर जुड़े क्षेत्रों में कार्य करने वाले उदीयमान शोधार्थियों और अनुभवी विद्वानों के लिए एक समान, सुलभ और विचारशील मंच तैयार करना है।

यह मंच विशेष रूप से उन शोधकर्ताओं के लिए स्थापित किया गया था जो—

- अपने मौलिक शोध कार्यों को अकादमिक समुदाय के साथ साझा करना चाहते थे,
- विविध विधाओं जैसे भाषाविज्ञान, इतिहास, पुरातत्व, साहित्य, धर्मशास्त्र, संस्कृति-अध्ययन, दर्शन, राजनीतिक चिंतन और मनोविज्ञान के बीच संवाद स्थापित करना चाहते थे,
- तथा बौद्ध अध्ययन को केवल धार्मिक संदर्भों में नहीं बल्कि मानव सभ्यता के बौद्धिक, नैतिक और सांस्कृतिक इतिहास के रूप में समझने के इच्छुक थे।

संस्था की स्थापना के मूल विचार में यह विश्वास निहित था कि ज्ञान का आदान–प्रदान ही शोध को आगे बढ़ाता है, और यदि विभिन्न दृष्टिकोण, विचार परंपराएँ और अकादमिक अनुशासन एक मंच पर बैठकर संवाद करें, तो न केवल इतिहास और विचारधारा स्पष्ट होती है, बल्कि भविष्य के लिए भी नई शोध दिशाएँ जन्म लेती हैं। इसी विचारधारा की निरंतर यात्रा अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। संस्था के 25 वर्ष सिर्फ समय की इकाई नहीं बल्कि *ज्ञान, शोध, संवाद और बौद्धिक परंपरा के पुनरोदय* की यात्रा का प्रमाण है।

रजत जयंती सम्मेलन विशेष रूप से इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह **साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय** के ऐतिहासिक परिसर में आयोजित हुआ —वह स्थल जहाँ बुद्ध का संदेश केवल शास्त्रों में नहीं, बल्कि पत्थरों, स्तूपों, शिलालेखों और कला की मौन भाषा में आज भी जीवित है। साथ ही माननीय कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ का नेतृत्व भी सम्मेलन को मिला जो कि आईएसबीएस के संस्थापक महासचिव रहे हैं और 18 वर्षों तक इस महती भूमिका को निभाया है।

साँची का महान स्तूप, जो लगभग दो हज़ार वर्षों से ध्यान, सम्यक् दृष्टि, करुणा और अहिंसा के संदेश का प्रतीक रहा है, आज भी इस सम्मेलन के माध्यम से ऐतिहासिक और समकालीन बौद्ध विमर्श के बीच एक जीवंत सेतु बनता है। इस स्थान पर सम्मेलन आयोजित होना मात्र संयोग नहीं, बल्कि उस वैचारिक निरन्तरता का प्रतीक है, जिसमें परंपरा आधुनिकता से संवाद करती है।
इस प्रकार, ISBS का 25वाँ वार्षिक सम्मेलन न केवल एक अकादमिक आयोजन है, बल्कि—

- बौद्ध अध्ययन की निरंतरता का उत्सव,
- विचार परंपराओं की एकता का मंच,
- शोध की सामूहिक चेतना का विस्तार,
- भावी पीढ़ियों के लिए **ज्ञान और करुणा आधारित बौद्धिक विरासत का पुनर्पुष्टि विधान**।

मध्यप्रदेश की बौद्ध एवं पुरातात्विक धरोहरों को विशेष महत्व देते हुए सम्मेलन में **बौद्ध कला एवं स्थापत्य** पर एक विशेष सत्र भी रखा गया, जिसमें मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की बौद्ध स्थापत्य परंपरा, साँची एवं भरहुत जैसे स्थलों के महत्व और उनके नए आयामों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया।

पहला दिन : उद्घाटन, AI–बौद्ध दर्शन संवाद और सम्मान समारोह

उद्घाटन सत्र : परंपरा, संवाद और भविष्य की दिशा का संगम

23 नवंबर 2025 को सम्मेलन का भव्य उद्घाटन सत्र **साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के मुख्य सभागार** में आयोजित हुआ। सभागार में देश–विदेश से आए विद्वानों, बौद्ध भिक्षुओं, शोधार्थियों तथा शैक्षणिक नेतृत्व की उपस्थिति ने वातावरण को गरिमापूर्ण बना दिया। उद्घाटन की क्षणमाला में दीप प्रज्वलन और मंगलाचरण के बाद बौद्ध परंपरा के अनुरूप शांत, सौम्य और शुभकामनापूर्ण वातावरण ने पूरे आयोजन को आध्यात्मिक और बौद्धिक गरिमा प्रदान की।

<u>विशिष्ट अतिथि संबोधन और अंतरराष्ट्रीय सहभागिता</u>

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **वियतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर प्रो. थिक नॉट टू** और अध्यक्ष आईएसबीएस के अध्यक्ष प्रो एसपी शर्मा थे। अपने संबोधन में प्रो. थिक नॉट टू ने भारत

और वियतनाम के ऐतिहासिक बौद्ध सांस्कृतिक संबंधों को स्मरण करते हुए कहा कि साँची, नालंदा, वैशाली और बोधगया जैसे स्थान केवल भौगोलिक धरोहर नहीं हैं, बल्कि बौद्ध विश्व के लिए आध्यात्मिक और बौद्धिक केंद्र रहे हैं।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि बौद्ध अध्ययन के वैश्विक पुनरुत्थान में भारत की भूमिका केवल ऐतिहासिक नहीं बल्कि भविष्य-निर्माणकारी है। पूजनीय प्रो थिक नॉट टू ने आने वाले वर्षों में वियतनाम और अन्य दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ संयुक्त शोध, छात्र–विनिमय कार्यक्रम और शैक्षणिक सहयोग में साँची विश्वविद्यालय से नेतृत्वकारी भूमिका निभाने की अपेक्षा की। प्रो. थिक नॉट टू को इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। यह अवसर ऐतिहासिक रहा क्योंकि प्रो थिक नॉट टू, इस प्रतिष्ठित मंच से सम्मानित होने वाले पहले वियतनामी विद्वान बने। यह सम्मान केवल व्यक्तिगत उपलब्धि ही नहीं था, बल्कि दो देशों के शैक्षणिक और सभ्यतागत संबंधों का प्रतीक बन गया।

AI और बौद्ध चिंतन — ज्ञान परंपरा और भविष्य विज्ञान का संवाद

उद्घाटन सत्र की विशिष्टता यह रही कि इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और बौद्ध दर्शन के संबंधों पर गंभीर विचार-विमर्श हुआ। वक्ताओं ने यह प्रश्न उठाया कि जब मानव जीवन तेजी से तकनीकी परिवेश में प्रवेश कर चुका है, तब **बुद्ध द्वारा प्रतिपादित चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, करुणा, प्रज्ञा और मध्यम मार्ग जैसे सिद्धांत नए युग में कैसे दिशा दे सकते हैं।**

चर्चा में यह दृष्टिकोण उभरकर आया कि AI की तीव्र प्रगति के बीच मानवता को केवल ज्ञान नहीं, बल्कि नैतिक उत्तरदायित्व, संवेदनशील चेतना और संतुलन की आवश्यकता है—और यह वह भूमिकाएँ हैं जो बौद्ध दर्शन आज भी निभा सकता है।

प्रकाशन विमोचन — ज्ञान परंपरा का संकलन

इस अवसर पर तीन महत्वपूर्ण प्रकाशनों का औपचारिक विमोचन हुआ—

- सम्मेलन की शोध सार पुस्तिका, जिसमें प्रस्तुत किए जाने वाले सभी शोधपत्रों के सार शामिल थे,
- वर्ष 2018 से 2021 तक आयोजित सम्मेलनों का कार्यवाही विवरण (Ocean of Wisodm)।

इन प्रकाशनों का विमोचन केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि आईएसबीएस की 25 वर्षीय शोध यात्रा का लिखित दस्तावेज था—जो भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए सन्दर्भ सामग्री के रूप में उपलब्ध रहेगा।

सम्मान, स्वीकृति और संस्थान के योगदान का आदर

उद्घाटन सत्र में संस्था द्वारा कई विद्वानों को उनके दीर्घकालिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इनमें—

- आईएसबीएस के संस्थापक सचिव एवं साँची विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ,
- आईएसबीएस के अध्यक्ष प्रो. एस.पी. शर्मा,
- तथा जम्मू विश्वविद्यालय की प्रो. नीता बिल्लोरिया

को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त—

- प्रो. सीताराम दुबे को *मंजूश्री एवं कमला देवी जैन सम्मान,*
- तथा प्रो. दीनानाथ शर्मा को *प्रो. सागरमल जैन प्राच्य विद्या सम्मान* प्रदान किया गया।

इन सम्मान समारोहों ने यह स्पष्ट किया कि आईएसबीएस केवल शोध–चर्चा का मंच नहीं, बल्कि विद्वता, परंपरा और अकादमिक समर्पण को आदर देने की परिपाटी का वाहक भी है।

स्मृति-ग्रंथ विमोचन और संस्थागत यात्रा का मूल्यांकन

रजत जयंती सम्मेलन उस ऐतिहासिक क्षण का भी साक्षी बना जब साँची विश्वविद्यालय के माननीय माननीय कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ पर आधारित **अभिनंदन ग्रंथ** का विमोचन किया गया। लगभग एक हजार पृष्ठों में सिमटी इस विचार यात्रा में माननीय कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ से जुड़े अकादमिक विद्वानों और साथ में काम करने वाले सहयोगियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये है।

अभिनंदन ग्रंथ के विमोचन के उपरांत अपने संबोधन में माननीय कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने वर्ष 2000 से लेकर वर्तमान तक आईएसबीएस की यात्रा को स्मरण करते हुए कहा कि यह संगठन आज मात्र एक संस्था नहीं बल्कि एक उद्भासित बौद्धिक चेतना और अंतरराष्ट्रीय विचार-विनिमय का विश्वसनीय मंच बन चुका है।

उन्होंने भावपूर्ण स्वर में यह स्वीकार किया कि इस यात्रा में संघर्ष, चुनौतियाँ और सीमाएँ थीं, लेकिन शोध की प्रतिबद्धता और बौद्ध चिंतन की शक्ति ने संस्था को आज उस स्थान पर स्थापित कर दिया है जहाँ यह वैश्विक स्तर पर बौद्ध विमर्श को प्रभावित कर रही है। माननीय कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ ने कहा कि वो अपने अगले लक्ष्य सिद्धि के रूप में साँची विश्वविद्यालय को भारतीय ज्ञान परम्परा के चिंतन में शीर्ष पर स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

उद्घाटन सत्र ने बुद्ध की करुणा और आधुनिक युग की बौद्धिक आवश्यकताओं के बीच सेतु स्थापित किया और यह संदेश दिया कि: परंपरा स्थिर नहीं होती वह संवाद, शोध और अनुभव के माध्यम से आगे बढ़ती है और यही आईएसबीएस की यात्रा का सार है।

वैचारिक विमर्श : तर्क, मध्य मार्ग और कथा परंपरा

उद्घाटन सत्र: विचार, विमर्श और बौद्ध बौद्धिकता का जीवंत संवाद

उद्घाटन सत्र के दौरान विभिन्न प्रतिष्ठित विद्वानों ने अपने विचार रखे, जिनमें बौद्ध दर्शन, तर्क परंपरा, समकालीन शोध पद्धति और बौद्ध शिक्षाओं के वर्तमान संदर्भों पर बहुस्तरीय विमर्श प्रस्तुत किया गया। उनके वक्तव्यों ने यह स्पष्ट रूप से दर्शाया कि बौद्ध विचारधारा आज भी केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि एक जीवंत, उपयोगी और भविष्यनिर्माणकारी ज्ञान-परंपरा है।

वैज्ञानिकता, तर्क और सावधानी—AI के परिप्रेक्ष्य में बौद्ध दृष्टि

नव नालंदा महाविहार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सिद्धार्थ सिंह ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज का युग तकनीकी तीव्रता का युग है, जहाँ **Artificial Intelligence (AI)** मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में हस्तक्षेप कर रहा है। उन्होंने कहा कि शोधकर्ताओं और विद्वानों के लिए यह समझना आवश्यक है कि ज्ञान और सुविधा के बीच का अंतर धुंधला होता जा रहा है।

उन्होंने चेतावनी दी कि शोध, अध्ययन और आलोचनात्मक चिंतन की जगह यदि केवल डिजिटल सूचनाओं और AI-आधारित सामग्री को स्वीकार कर लिया जाए, तो मानव विवेक और तर्क-शक्ति धीरे-धीरे प्रभावित हो सकती है। उनके अनुसार—

“ज्ञान वही है जिसे प्रश्नों, परीक्षण और तर्क की अग्नि में तपाया जाए, न कि वह जो बिना जांचे इंटरनेट से प्राप्त हो।” उनका यह संदेश विशेष रूप से युवा शोधार्थियों के लिए प्रेरक और मार्गदर्शक रहा।

बुद्ध: समय, भूगोल और भाषा की सीमाओं से परे

आईएसबीएस के 25वें अधिवेशन के अध्यक्ष प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने गौतम बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं को विश्व मानवता की धरोहर बताते हुए कहा कि बुद्ध केवल भारत या एशिया की आध्यात्मिक परंपरा के प्रतिनिधि नहीं बल्कि समूची मानव सभ्यता के लिए प्रकाश पुंज हैं। उन्होंने बुद्ध को न केवल 'एशिया की ज्योति' बल्कि 'विश्व की ज्योति' निरूपित किया | इसमें उन्होंने बौद्ध दर्शन के चातुर्धर्मोद्दान या चार प्रधान सत्यों का उल्लेख किया है | उन्होंने कहा कि बुद्ध का संवाद सूत्र—*कथा पद्धति*—संवाद, शिक्षण और समझ का सर्वोत्तम माध्यम था, और इसी से आगे चलकर *जातक साहित्य* जैसे अमूल्य आख्यानों का विकास हुआ।

उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि बुद्ध ने किसी भी प्रकार के उग्र मत, कठोर संप्रदायवाद और विचार के चरम ध्रुवों का निरसन कर **मध्य मार्ग** को जीवन पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया—और यह दर्शन आज के ध्रुवीकृत और मत–संघर्षों से ग्रस्त वैश्विक समाज के लिए उतना ही आवश्यक है जितना 2,500 वर्ष पूर्व था।

तर्क और अनुभव—बौद्ध दर्शन की बौद्धिक जड़ें

पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. एस.एस. मिश्रा ने बुद्ध के मूल कथन— ***"अत्त दीपो भव"***—का संदर्भ देते हुए तर्क, परीक्षण और आत्मअनुभव को बौद्ध ज्ञान-प्राप्ति का मूल आधार बताया। उन्होंने कहा:

"बुद्ध स्वयं कहते थे—मेरी बात को बिना सोचे समझे केवल इस कारण मत मानो कि मैंने कहा है, बल्कि उसे तर्क, अनुभव और उपादेयता की कसौटी पर जांचो, परीक्षण करो —यदि सही लगे तभी स्वीकार करो।" प्रो. मिश्रा ने कहा कि बौद्ध दर्शन में तर्क से विद्या और ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है। तर्क अज्ञान को मिटाकर वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

उन्होंने बताया कि बौद्ध दर्शन केवल आध्यात्मिक सिद्धांत नहीं बल्कि **ज्ञानमीमांसा (Epistemology)**, **तर्कशास्त्र**, **नैतिकता** और **मानवतावादी चिंतन** का एक सुव्यवस्थित वैचारिक ढांचा है।

बुद्ध विचार का सबसे बड़ा स्वरूप—अनुभव और आचरण

आईएसबीएस के अध्यक्ष **प्रो. एस.पी. शर्मा** ने संक्षिप्त किंतु सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं का वास्तविक अर्थ तभी पूर्ण होता है जब वे जीवन में व्यवहार रूप में उतरें। उनके शब्दों में— "बुद्ध का दर्शन पढ़ने के लिए नहीं, जीने के लिए है।"

स्मृति–व्याख्यान: प्रो. जी.सी. पांडेय की विद्वत्ता को सम्मान

उद्घाटन सत्र के पश्चात् **प्रो. जी.सी. पाण्डे स्मृति व्याख्यान** आयोजित किया गया। इस अवसर पर उनकी सुपुत्री एवं प्रसिद्ध इतिहासविद **प्रो. सुष्मिता पाण्डे** ने प्रो. जी.सी. पांडेय के शोध, लेखन, जीवन अनुभव और बौद्ध दृष्टि पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि प्रो. पांडेय केवल इतिहासकार नहीं थे—वे *कला, दर्शन, संस्कृति और भाषिक चेतना* के गहरे अध्येता थे, जिनका चिंतन भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ों से जुड़ा था।

पहले दिन के तकनीकी सत्र — बौद्ध अकादमिकता का प्रारंभिक विस्तार

उद्घाटन सत्र के बाद दिन के अंत में दो तकनीकी सत्र आयोजित हुए जिनकी अध्यक्षता—

- **प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा**
- एवं **प्रो. सीताराम दुबे**

द्वारा की गई। दोनों सत्रों में लगभग **20 शोधपत्र** प्रस्तुत किए गए, जिनमें *धर्म, पुरातत्व, बौद्ध साहित्य, दर्शन और आधुनिक चिंतन* के कई आयामों पर सार्थक और गहन चर्चा हुई।

समापन टिप्पणी

उद्घाटन दिवस विचारों, शोध और अनुभवों की ऐसी संगति से सम्पन्न हुआ जिसने सम्मेलन के आगामी दिनों की दिशा स्पष्ट है कि यह आयोजन केवल सार-संग्रह नहीं बल्कि ज्ञान के नए आयामों का उद्घाटन है।

दूसरा दिन : युद्धकाल में बौद्ध धर्म, चित्त शुद्धि और अप्लाइड बुद्धिज्म

सम्मेलन के **दूसरे दिन (24 नवंबर 2025)** को चार अलग–अलग सत्रों में लगभग **50 शोधपत्र** पढ़े गए। दिन का केंद्रीय विषय था –

"युद्धकाल में बौद्ध धर्म की उपयोगिता, चित्त की शुद्धि और अप्लाइड बुद्धि "

मुख्य सामान्य सत्र में **प्रो. अरविंद जामखेड़कर** ने मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की बौद्ध स्थापत्य कला पर विचार रखते हुए साँची स्तूप के कई कम ज्ञात पहलुओं को सामने रखा। उन्होंने यह भी बताया कि इन क्षेत्रों में बौद्ध पुरातात्विक स्थलों पर अभी और व्यापक शोध की संभावनाएँ मौजूद हैं।

समानांतर सत्रों की मुख्य झलक

1. **प्रो. सुष्मिता पाण्डे** की अध्यक्षता में हुए सत्र में—
    - मध्यप्रदेश की पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण साइट **तुमेन** पर शोध प्रस्तुत किया गया।
    - **भरहुत** और **साँची स्तूप** के शिल्प एवं अभिलेखों में निहित मानव मूल्यों का विश्लेषण किया गया।
    - बौद्ध स्थापत्य कला में *भय और साहस* के प्रतीकों की दार्शनिक व्याख्या की गई।
    - भारत और थाइलैंड के सांस्कृतिक रिश्तों को बौद्ध सर्किट के संदर्भ में आँकने के प्रयास प्रस्तुत किए गए।
2. **प्रो. बंदना मुखर्जी** की अध्यक्षता वाले सत्र में—
    - *धम्मपद* और धम्म उपदेश में **चित्त की शुद्धि** के वर्णन,
    - बंगाल में बौद्ध दर्शन के पुनरुत्थान,

- श्रीलंका में बुद्ध धम्म की विचार परंपरा,
- *थेरगाथा* में स्त्री के चित्रण,
- तथा जातक कथाओं का हिंदी साहित्य पर प्रभाव जैसे विषयों पर शोधपत्र रखे गए। इस सत्र में अंधश्रद्धा से बाहर निकलकर *वेदना निवारण के लिए चित्त शुद्धि* पर विशेष बल दिया गया।

3. **प्रो. केदारनाथ शर्मा** की अध्यक्षता में तीसरे समानांतर सत्र में—
   - बौद्ध दर्शन के **व्यवहारिक (Applied)** पक्षों पर चर्चा हुई।
   - यह प्रश्न केंद्र में रहा कि किसी आम व्यक्ति के दैनिक जीवन में बौद्ध सिद्धांत किस प्रकार मार्गदर्शक और उपयोगी हो सकते हैं।
   - बौद्ध दर्शन की **कल्याणकारी अर्थव्यवस्था**,
   - विश्व और चीन के संदर्भ में बौद्ध दृष्टि,
   - बुद्धकालीन उत्सव एवं कर्म-काण्ड
   - बौद्ध नीति शिक्षा, शांति की स्थापना, करुणा और कर्म जैसे विषयों पर 10 से अधिक शोधपत्र पढ़े गए।

दूसरे दिन सभी आमंत्रित शिक्षकों, विद्वानों और शोधार्थियों ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित **बोधि वृक्ष** के दर्शन किए, उसके बाद परिसर का भ्रमण किया और अंत में सभी प्रतिनिधि **साँची स्तूप** भी पहुंचे। साँची स्तूप के साथ ही सतधारा स्तूप का भी भ्रमण किया। इससे सम्मेलन केवल अकादमिक न रहकर एक **आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव** में भी रूपांतरित हो गया।

तीसरा दिन : समापन, वैश्विक दृष्टि और साँची विवि को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देने का संकल्प

25 नवंबर 2025 को सम्मेलन के तीसरे और अंतिम दिन तीन तकनीकी सत्र आयोजित हुए जिनमें 40 शोधपत्र पढ़े गए। प्रो दीनानाथ शर्मा की अध्यक्षता में हुए सत्र में -

- बुद्धकालीन शिक्षण एवं शिक्षण व्यवस्था
- कंबिल- एक आदर्श बौद्ध गांव
- बौद्ध संघ में महिलाओं की भागीदारी और भिक्षुणी परंपरा का विकास
- बौद्ध धर्म में कुशक बकुला का सामाजिक एवं दार्शनिक योगदान
- हिंदी साहित्य की चयनित कविताओं में बौद्ध दर्शन का प्रभाव

प्रो रेणु शुक्ला की अध्यक्षता में हुए सत्र में –

- नागार्जुन एवं गौडपाद के दर्शन में सत्, कारणता एवं निर्वाण
- सांख्य एवं बौद्ध दर्शनों में दुख निवृत्ति के उपाय
- बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म की अवधारणा
- बुद्धकालीन शिक्षक एवं शिक्षा व्यवस्था
- बौद्ध धर्म में अनीश्वरता एवं कर्मनिष्ठा के संबंधों का दार्शनिक विश्लेषण

प्रो टी. एन. सतीशन की अध्यक्षता में हुए सत्र में –

- महायान का बोधिसत्त्व तथा श्रीमद्भगवद्गीता का स्थितप्रज्ञ : एक तुलनात्मक अध्ययन
- मध्य प्रदेश में बौद्ध पर्यटन विकास विरासत
- सांची के विशेष संदर्भ में हिंदी साहित्य के उपनिवेश
- साँची स्तूप की वेदिकाओं में सामाजिक संरचनाओं का परिदृश्य
- हिन्दी साहित्य के उपन्यासों में बौद्ध दर्शन का प्रभाव

सभी सत्रों में सार्थक चर्चा एवं विषय पर केंद्रित उपयोगी संवाद हुआ।

वेनेगल उपतिस्स नायक थेरो का प्रेरक उद्बोधन

समापन सत्र के मुख्य अतिथि **महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका** के **वेनेगला उपतिस्स नायका थेरो** रहे। उन्होंने हिन्दी में अपना उद्बोधन देते हुए—

- साँची से अपने गहरे जुड़ाव को याद किया; वे साँची के स्कूल में पढ़े, एस.एस. जैन कॉलेज विदिशा से स्नातक रहे और भोपाल के बरकतुल्ला विश्वविद्यालय के प्रथम बैच के छात्र भी रहे।
- उन्होंने घोषणा की कि वे साँची विश्वविद्यालय को **अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय** का दर्जा दिलाने के लिए भारत के प्रधानमंत्री श्री **नरेंद्र मोदी** से मुलाकात करेंगे और इस संबंध में वे एक पत्र भी लिख चुके हैं।
- थैरो ने कहा कि यदि साँची विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप में विकसित होता है तो विश्वभर से बौद्ध और वैदिक अध्ययन के विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए यहाँ आएँगे, जिससे यह स्थल वास्तव में वैश्विक बौद्ध–वैदिक ज्ञान–केंद्र बन सकेगा।

वेनेगल थेरो ने अपने जीवन अनुभवों के आधार पर बुद्ध की करुणा और मानवता पर आधारित शिक्षा का व्यावहारिक रूप साझा किया। उन्होंने कहा—

- भारत में रहकर उन्होंने **अनेकता में एकता** को जीया है।
- "सबको देखो और मुस्कुरा दो, थोड़ा सिर झुका दो, पूरा विश्व तुम्हारे साथ हो जाएगा" – इस सरल सूत्र के सहारे उन्होंने बताया कि मुस्कान और विनम्रता ने ही उन्हें जापान में पहला **थेरवाद मंदिर** स्थापित करने में मदद की।
- इसी मानवीय व्यवहार के कारण वे **सऊदी अरब जाने वाले पहले बौद्ध भिक्षु** बने।
- उन्होंने कहा कि किसी भी **एक धर्म विशेष के स्कूल** नहीं होने चाहिए, बल्कि ऐसे विद्यालय होने चाहिए जहाँ सभी धर्मों के लोग मिलकर पढ़ें और अपनी–अपनी संस्कृतियाँ साझा करें।
- उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि **वेटिकन के पोप**, जो सामान्यतः अमेरिका के राष्ट्रपति से भी नहीं मिलते, वे कोलंबो स्थित उनके महाविहार में उनसे मिलने आए थे।

माननीय कुलगुरु और अध्यक्ष के विचार

साँची विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरु और सम्मेलन के अध्यक्ष **प्रो. वैद्यनाथ लाभ** ने कहा कि यदि साँची विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त कर लेता है, तो विश्व के विभिन्न देशों से बौद्ध एवं वैदिक अध्ययन के विद्यार्थी, शोधार्थी और अध्यापक यहाँ उच्च शिक्षा एवं शोध के लिए आएँगे। उन्होंने बौद्ध धर्म को **सभी धर्मों का निचोड़** बताते हुए कहा कि बुद्ध का मार्ग संवाद, करुणा और तर्क पर आधारित है, जो आज की विश्वव्यापी उथल–पुथल के बीच शांति का मार्ग दिखा सकता है।

आईएसबीएस के अध्यक्ष **प्रो. एस.पी. शर्मा** ने वेनेगला उपतिस्स थैरो की जीवनशैली और कार्यों को बुद्ध की शिक्षाओं का सजीव उदाहरण बताते हुए उन्हें संप्रदायवाद और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर **विश्व कल्याण की भावना** से कार्य करने वाला महान मानवतावादी बताया। उन्होंने कहा कि—
"यदि ज्ञान गोपनीय रखा जाए, तो वह नष्ट हो जाता है; जितना हम ज्ञान का प्रचार–प्रसार करेंगे, उतना ही उसका संवर्धन होगा।"
उन्होंने स्पष्ट किया कि बुद्ध के ज्ञान को **संवर्धित करने और फैलाने** का कार्य आईएसबीएस पूरे समर्पण के साथ कर रहा है। शोधार्थियों और छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अकादमिक जगत में भाषा सदैव **साहित्यिक और शिष्ट** होनी चाहिए।

कॉन्फ्रेंस रिपोर्ट और धन्यवाद ज्ञापन

समापन सत्र में साँची विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डॉ नीहारिका लाभ का आईएसबीएस की ओर से विशेष सम्मान किया गया। सम्मान ग्रहण करते हुए डॉ नीहारिका लाभ ने कहा कि वे विश्वविद्यालय के विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं। इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज के पदाधिकारियों का भी सम्मान किया गया।

आईएसबीएस की सचिव **प्रो. सास्वती मुत्सुद्दी** ने तीन दिवसीय अकादमिक समारोह से संबंधित विस्तृत **कॉन्फ्रेंस रिपोर्ट** प्रस्तुत की। उन्होंने साँची विश्वविद्यालय में आईएसबीएस के स्थानीय सचिव एवं सहायक प्राध्यापक **डॉ. संतोष प्रियदर्शी** को सफल आयोजन में उनकी भूमिका के लिए विशेष धन्यवाद दिया।

समारोह के अंत में उपकुलसचिव **श्री विवेक पाण्डेय** ने सभी मंचासीन अतिथियों, देश–विदेश से पधारे विद्वानों, शोधार्थियों, मीडिया प्रतिनिधियों तथा साँची विश्वविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य को आयोजन को सफल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

निष्कर्ष : बौद्ध ज्ञान, वैश्विक संवाद और भविष्य की दिशा

तीन दिवसीय रजत जयंती सम्मेलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ केवल एक अकादमिक संस्था नहीं, बल्कि **बुद्ध के ज्ञान–परंपरा को वैश्विक स्तर पर जीवंत रखने वाला सशक्त मंच** है।

साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय की मेज़बानी ने इस आयोजन को एक विशिष्ट आयाम दिया, जहाँ —

- परंपरा और आधुनिकता,
- आध्यात्मिकता और तर्क,
- स्थानीय विरासत और वैश्विक दृष्टि

सब एक साथ दिखाई दिए।

इस सम्मेलन से निकला मुख्य संदेश यही रहा कि बौद्ध दर्शन आज भी युद्ध, हिंसा, अशांति, विषमता और मानसिक तनाव से जूझती मानवता को **मध्य मार्ग, करुणा, चित्त शुद्धि और तर्कपूर्ण विचार** के माध्यम से एक संतुलित, मानवीय और शांतिपूर्ण भविष्य की ओर ले जा सकता है।

आईएसबीएस रजत जयंती सम्मेलन

तकनीकी सत्रों पर विस्तृत रिपोर्ट

साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय

23–25 नवम्बर 2025

प्रस्तुत शोधपत्र: 80+ विद्वानों द्वारा

इंडियन सोसायटी फॉर बौद्धिस्ट स्टडीज़ (ISBS) के 25वें वार्षिक अधिवेशन में विविध विमर्श क्षेत्रों के शोधार्थियों एवं विद्वानों ने बौद्ध अध्ययन, पुरातत्व, सांस्कृतिक इतिहास, दर्शन, भाषा और एप्लाइड ज्ञान की बहुआयामी व्याख्या प्रस्तुत की। तीन दिनों के तकनीकी सत्र इस सम्मेलन का बौद्धिक केंद्र रहे, जिनमें प्रस्तुत शोधपत्रों ने न केवल ऐतिहासिक अध्ययन को समृद्ध किया बल्कि भविष्य में शोध के नए रास्तों को भी चिह्नित किया।

इन शोधपत्रों के मुख्य बिंदु थे—

- प्राचीन बौद्ध धर्म और आधुनिक समाज का संवाद
- वैदिक, वैदिकेतर और बौद्ध दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन
- महिला योगदान, शिक्षा, युद्ध, राजनीति, व्यापार और सामाजिक संरचना में बुद्ध के सिद्धांतों की भूमिका
- माइंडफुलनेस, ध्यान और मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य का आधुनिक उपयोग

- **पहला तकनीकी सत्र — बौद्ध पुरातत्व एवं कला–इतिहास**

स्थान: आनंद हॉल | 23 नवम्बर | 4:00 PM – 6:30 PM

इस सत्र की विशेषता थी कि अधिकांश शोध *स्थानीय धरोहरों के नए पुरातात्विक प्रमाणों,* अप्रकाशित कला सामग्री और क्षेत्रीय संस्कृति की पहचान पर आधारित थे।

प्रमुख अवलोकन:

शोध विषय	शोध-योगदान
पश्चिम बंगाल में अवलोकितेश्वर की दुर्लभ प्रतिमा	महायान बोधिसत्त्व उपासना के दुर्लभ प्रमाण मिले

शोध विषय	शोध-योगदान
सुंदरबन के बौद्ध अवशेष	यह क्षेत्र केवल प्राकृतिक नहीं बल्कि **बौद्ध सांस्कृतिक भूगोल** रहा
नंदीग्राम की भिक्षुणियाँ	महिला दान–संस्कृति और संघीय योगदान का प्रमाण
बोधगया कला का पुनर्मूल्यांकन	कला में दानकर्ताओं की सामाजिक पहचान उभरती है
पाल–सेन कला में चैत्यगर्भ मंदिर	भारत–नेपाल–तिब्बत कला शैली का तारतम्य

इस सत्र से यह निष्कर्ष निकला कि **भारतीय बौद्ध स्थलों का अध्ययन अभी अधूरा है और स्थानीय अनुसंधान से बहुत सामग्री उजागर हो सकती है।**

- **दूसरा तकनीकी सत्र — बौद्ध दर्शन, ज्ञानमीमांसा और चेतना अध्ययन**

सारिपुत्र हॉल | 23 नवम्बर | 4:00 PM – 6:30 PM

यह सत्र दार्शनिक तुलना, मनोवैज्ञानिक विमर्श और ज्ञान-सिद्धांतों पर आधारित रहा।

मुख्य विषय और निष्कर्ष:

- **नैयायिक और बौद्ध वाद–संवाद** — यह केवल विचारों का संघर्ष नहीं बल्कि *तर्क पद्धति का विकास* था।
- **ध्यान की संज्ञानात्मक संरचना** — बौद्ध ध्यान आधुनिक कॉग्निटिव थेरेपी के समान कार्य करता है।
- **आत्मा और अनत्ता का तुलनात्मक अध्ययन** — कृष्णमूर्ति और बुद्ध दोनों अनुभवजन्य सत्य को प्राथमिकता देते हैं।
- **दान की अवधारणा** — बौद्ध अर्थव्यवस्था केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि **सामाजिक न्याय की अवधारणा** है।

- **तीसरा तकनीकी सत्र — बौद्ध विरासत, स्थापत्य और सांस्कृतिक सभ्यताएँ**

आनंद हॉल | 24 नवम्बर | 11:30 AM – 1:30 PM

यह सत्र सांस्कृतिक भूगोल, पर्यटन, अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संपर्कों और स्थापत्य कला पर केंद्रित रहा।

प्रमुख शोधों ने स्थापित किया:

- साँची से सोपारा तक समुद्री व्यापार मार्गों ने बौद्ध संस्कृति को रूप दिया।

- मारा का चित्रण केवल धार्मिक दुश्मन नहीं बल्कि **मानवीय मनोवैज्ञानिक संघर्ष का प्रतीक** है।
- दक्षिण पूर्व एशिया के सिक्कों पर बुद्ध–प्रतीकों ने बताया कि बौद्ध धर्म आर्थिक गतिविधि में भी समाहित था।
- थाई–भारत बौद्ध सर्किट ने कूटनीति में धर्म की भूमिका सिद्ध की।

🔹 चौथा तकनीकी सत्र — बौद्ध भाषा और साहित्यिक विरासत

सारिपुत्र हॉल | 24 नवम्बर

यह सत्र भाषा विज्ञान, अनुवाद अध्ययन और साहित्यिक परंपराओं पर आधारित था।

प्रमुख निष्कर्ष:

- पाली साहित्य में स्त्री अनुभव का विस्तृत स्थान है — **थेरिगाथा पहला स्त्री-आवाज़ वाला संग्रह माना गया।**
- जातक कथाएँ केवल नैतिक साहित्य नहीं बल्कि **समाजशास्त्रीय दस्तावेज** भी हैं।
- बौद्ध ग्रंथों के भाषाई रूपांतरणों ने यह सिद्ध किया कि धर्म स्थिर नहीं—*गतिशील सांस्कृतिक प्रक्रिया* है।

🔹 पाँचवाँ तकनीकी सत्र — एप्लाइड बुद्धिज़्म और आधुनिक समाज

महा-मोग्गलान हॉल | 24 नवम्बर

यह सत्र सबसे व्यावहारिक माना गया।

महत्वपूर्ण विषयों में—

- युद्ध और शांति समाधान
- धार्मिक बाज़ारीकरण
- त्योहार और जीवन संस्कृति
- शिक्षा एवं पारिवारिक मूल्य
- कर्म, करुणा और सामाजिक न्याय

यहाँ प्रस्तुत शोध ने सिद्ध किया कि बौद्ध धर्म आज *वर्कप्लेस माइंडफुलनेस, सामाजिक न्याय, संघर्ष समाधान, मानसिक स्वास्थ्य और शासन में* प्रभावी मॉडल बन सकता है।

- **छठा–सातवाँ–आठवाँ सत्र — शिक्षा, समाज, भारतीय पुनर्जागरण और तुलनात्मक दर्शन**

25 नवम्बर

इन सत्रों में—

- नागार्जुन और गौड़पाद के दर्शन की तुलना
- बुद्धकालीन शिक्षण एवं शिक्षण व्यवस्था
- अंबेडकर का नव-बौद्ध आंदोलन
- महिला संघ परंपरा
- विपश्यना और चेतना विज्ञान
- बौद्ध पुनर्जन्म सिद्धांत
- हिन्दी साहित्य में बौद्ध दर्शन

जैसे विषयों पर गंभीर विचार प्रस्तुत हुए।

सम्मेलन का समग्र निष्कर्ष

इस वर्ष के तकनीकी सत्रों ने निम्न शोध–दिशाएँ स्पष्ट कीं—

बौद्ध अध्ययन अब चार नए क्षेत्रों की ओर बढ़ रहा है:

नया शोध क्षेत्र	**भूमिका**
इंटरडिसिप्लिनरी बौद्ध अध्ययन	इतिहास + मनोविज्ञान + एआई + दर्शन
समकालीन नीति और कूटनीति	धर्म → वैश्विक शांति और संवाद
बौद्ध शिक्षा और नैतिकता मॉडल	स्कूल, सेना, प्रशासन में उपयोग
डिजिटल धरोहर और प्राचीन डेटा	एआई आधारित धरोहर पुनर्निर्माण

उपसंहार

आईएसबीएस सम्मेलन के तकनीकी सत्रों ने यह सिद्ध किया कि—

बौद्ध अध्ययन केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा है।

यह सम्मेलन आगामी पीढ़ियों के शोधार्थियों को एक मजबूत मंच प्रदान करता है, जहाँ बौद्ध दर्शन, संस्कृति और विज्ञान मिलकर मनुष्य और मानवता के विकास का मार्ग तैयार करते हैं।